कोरोना जंग में अमेरिका व चीन आमने-सामने

पुष्परंजन

यूएस एडवोकेसी ग्रुप 'फ्रीडम वाच' और 'बज फोटोज़' ने चीन के विरुद्ध टेक्सास डिस्ट्रिक्ट कोर्ट में 2० ट्रिलियन डॉलर के हर्जाने का दावा ठोका है। अमेरिकी वकील लैरी क्लेमन ने चीन सरकार, चीनी आर्मी, वुहान इंस्टीच्यूट ऑफ वायरोलॉजी, उसके डायरेक्टर शी चेंगली, 54 साल की महिला बायोकेमिकल एक्सपर्ट मेजर जनरल चन वेई को कोरोना वायरस फैलाने का दोषी बताया है। ज़ाहिर-सी बात है कि यह ट्रंप प्रशासन की शह पर हुआ है। चीन इसे लेकर चुप बैठेगा, ऐसा संभव नहीं दिखता। चीनी अदालत में भी टेक्सास की तरह अमेरिका के विरुद्ध मुकदमा दायर करने की तैयारी चल रही है। इससे पहले चीन 13 अमेरिकी पत्रकारों को देश निकाले का आदेश दे चुका है।

18 मार्च, 2०2० को वाल स्ट्रीट जर्नल, वाशिंगटन पोस्ट और न्यूयार्क टाइम्स के 13 पत्रकारों के देश निकाले की घोषणा के साथ चीनी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने कहा था कि इन्हें हांगकांग और मकाउ स्पेशल ज़ोन से भी काम करने की अनुमति नहीं होगी। इससे पहले फरवरी के आख़िर में अमेरिका, पांच चीनी पत्रकारों को 'फॉरेन मिशन' का आरोप चस्पां कर निकाल चुका था। यों भी 'जर्नलिस्ट वीज़ा' के बगैर विदेशी पत्रकारों को काम करने की अनुमति चीन में नहीं है। एक साल की अधिकतम अवधि वाले वीज़ा की हर साल विदेश मंत्रालय समीक्षा करता है, उस आधार पर उसे नवीनीकरण की अनुमति दी जाती है। चीन इससे पहले 2०19 में वाल स्ट्रीट जर्नल के रिपोर्टर चुन हान वोंग, 2०15 में फ्रेंच वीकली ल-ओब्स की पत्रकार ऊर्सला गोथियर और 2०12 में अल ज़ज़ीरा की पत्रकार मेलिसा चन को देश से निकाल चुका है।

पिछले हफ्ते निकाले 13 पत्रकारों का कसूर यह है कि इन्होंने चीनी चक्षुरोग विशेषज्ञ डॉ. ली वेनलियांग की ख़बर छापी थी, जो कोरोना वायरस की चपेट में आने की वजह से फरवरी के शुरू में मर गये थे। 34 साल के डॉ. ली वेनलियांग को जनवरी, 2०2० में स्थानीय शासन ने अफ़वाह फैलाने के आरोप में धर दबोचा था।

17 साल पहले सार्स के चीन में फैलने की ख़बर देश से बाहर दुनिया को बताने में टाइम मैगज़ीन ने बड़ी भूमिका अदा की थी। उन दिनों भी एक चीनी डॉक्टर चियांग यांगयोंग व्हिसल-ब्लोवर के रूप में नमूदार हुए थे। 2००3 में टाइम मैगज़ीन की पेइचिंग स्थित संवाददाता सुज़न जैक्स को इसकी कवरेज की वजह से देश निकाला दिया गया था। चीनी सोशल मीडिया पर पहले और अभी की घटनाओं के हवाले से एक तंज़ प्रचलित है, 'श्वे हाओ यौंग यू, लियाओ चिये चुंग क्वो', अर्थात् 'चीन को अच्छे से समझने के लिए अंग्रेज़ी पढ़िये।' यह कबीरदास की उल्टी वाणी जैसी है। क्योंकि चीनी भाषा के प्रसार के वास्ते स्लोगन दिया जाता है-'चीन को अच्छे से समझने के वास्ते चीनी पढ़िये।' चीन के लिए मुसीबत ही है कि जो विदेशी पत्रकार मंदारिन जानते हैं, वे कब्र से ख़बरें खोदकर दुनिया को बताने में लगे हैं।

दावोस में आहूत 2०19 के वर्ल्ड इकोनॉमी फोरम में चीन ने जानकारी दी थी कि उसकी अर्थव्यवस्था 22.37 ट्रिलियन डॉलर की है। इसी हफ्ते चीनी समाचारपत्र पीपुल्स डेली ने अपने संपादकीय में लिखा कि 2०2० के शुरुआती दो महीनों में औद्योगिक आउटपुट वैल्यू 11.5 ट्रिलियन युआन की थी। यानी, चीनी मीडिया, 'स्थिति सामान्य हो रही है', यह बताने में लग गया है। मात्र तीन प्रतिशत निर्यात वाला भारतीय बाज़ार चीन की चिंता का विषय नहीं है, जितना कि यूरोप और अमेरिका के बाज़ार उसके लिए मायने रखते हैं। भारतीय बाज़ारों में चीनी वस्तुओं का बहिष्कार हो भी जाता है तो उससे चीन की अर्थव्यवस्था बर्बाद नहीं हो जाएगी।

इस नूराकुश्ती से ट्रंप फायदे में रहेंगे, ऐसी बात भी नहीं है। कनाडा और मैक्सिको के बाद, चीन अमेरिकी निर्यात का तीसरा बड़ा मार्केट है। 2०19 के आख़िर तक अमेरिका और चीन 555.25 अरब डॉलर का व्यापार कर रहे थे। उसमें से अमेरिका 1०6.63 अरब डॉलर का एक्सपोर्ट चीन को कर रहा था। इनमें सिविलियन एयरक्राफ्ट के पार्ट्स, कंप्यूटर चिप्स, सोयाबीन, माल ढुलाई वाले मोटरव्हीकल, मशीनरी पार्ट्स, सर्जरी के सामान और तेल शामिल हैं। ये अमेरिकी कंपनियां ट्रंप-शी के युद्ध में किसी नुकसान को क्यों झेलें

राष्ट्रपति चुनाव की दृष्टि से देखें तो ट्रंप इस दुष्प्रचार युद्ध में आगे चलकर नुकसान उठा सकते हैं। कुल 5.6 प्रतिशत एशियन अमेरिकन आबादी में चीनी मूल के लोग 3.79 मिलियन, दूसरे नंबर पर फिलीपींस के 3.41 मिलियन और तीसरे नंबर पर इंडियन-अमेरिकन, 3.18 मिलियन हैं। ट्रंप ने 'कोविद-19' का नाम परिवर्तन अकेले नहीं किया कि यह 'चीनी वायरस' है, बल्कि उनके विदेश मंत्री माइक पोंपियो भी इस शब्द समर में कूद पड़े थे।

संपादकीय

सैंया भए 'क्वारंटाइन' अब डर काहे का

'कोरोना वायरस' के फैलने की खबर से भले ही पूरी दुनिया चौकन्नी और सरकार चाक-चौबंद हो गई हो, लेकिन इस वायरस ने उन लोगों की बीवियों की जिंदगी में रस भर दिया है, जिनके शौहर अक्सर घरों से दूर बने रहते थे। इस वायरस ने उन्हें घरों में रहने के लिए मजबूर कर दिया है। घर में कैद शौहर कोरोना के साइड इफेक्ट 'क्वारंटाइन' को वेलेंटाइन के रूप में इस्तेमाल करना चाहता है तो बीवी बोलती है 'सैंया मोरी पकड़ो न बयां, तुम तो भए क्वारंटाइन!' तुम्हें नहीं

मालूम कोरोना के खौफ से बड़े-बड़े सेलिब्रिटी ने खुद को 'क्वारंटाइन' मोड पर डालकर अलग-थलग कर लिया है।

क्वारंटाइन जैसे नये शब्द को सुनकर कोरोना का दिन-रात रोना रोने वाले मित्र बोले -गांव का आदमी हूं, मुझे अच्छी तरह से मालूम है कि इस वायरस ने अच्छों-अच्छों को प्रसव वाली 'जापे' की महिलाओं की तरह खुली कैद में कैद कर लिया है। जिस तरह जापे के दौरान महिला अलग-थलग रखी जाती है, उसी तरह कोरोना से दूरी बनाने के लिए क्वारंटाइन में रखते हैं।

पंडितजी बोले-आयाराम-गयाराम और दलबदलू माननीयों को विरोधी वायरसों से मुक्त रखने के लिए रिसॉर्ट में छिपाकर उन्हें रखते हैं। इस क्वारंटाइन की वेलिडिटी अवधि सत्ता का खेल बनने और बिगड़ने तक ही रहती है। माननीयों को रिसॉर्ट रूपी खुली और सुविधाजनक कैद में रखा जाता है। माननीय किसी विरोधियों से सुर न मिला ले इसके लिए उनको सुरक्षा में रखा जाता है।

पंडित जी बोले-कोरोना क्या आया, क्वारंटाइन के तहत लोगों को घर से बाहर नहीं निकलने दिया जा रहा है। एक-दूसरे के साथ कुछ घंटे रहने वाले दम्पतियों को दिन-रात साथ रहने के कारण अब ऊब होने लगी है। जिन्होंने एक-दूसरे के मोबाइल सालों से नहीं देखे वे देखे जा रहे हैं, जिससे दोनों की अंदरूनी परतें खुलने से विवाद हो रहे हैं। यही नहीं, क्वारंटाइन से घर में कैद लोग ऑनलाइन पर गेम खेलने के लिए मजबूर हैं।

पंडित जी क्वारंटाइन का चालीसा पढ़ते-पढ़ते उद्वेलित होकर बोले-कोरोना ने पूरे विश्व में अघोषित कर्फ्यू लगवा दिया, चप्पे-चप्पे को खुली जेल में बदल दिया, आपातकाल से भी ज्यादा खतरनाक आफतकाल ला दिया। लोग सालों से चीनी वस्तुओं के नकली होने का आरोप लगाकर उपयोग करते आ रहे थे। क्या मालूम था कि चीन का कोरोना वायरस असल निकल जाएगा!

सू- दोकू क्र.082

		3					7	
9				6		3		8
	7		9		5		6	
						1		9
3		8		7			5	
	1		3		9			7
		2		8		7		
	8				2		4	3
			1					

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गों का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक र सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.81 का हल

5	2	4	9	6	7	8	1	3
3	6	7	4	1	8	2	9	5
8	1	9	3	2	5	4	6	7
6	3	5	1	9	4	7	2	8
7	9	8	5	3	2	6	4	1
2	4	1	7	8	6	5	3	9
4	5	3	6	7	9	1	8	2
9	8	6	2	5	1	3	7	4
1	7	2	8	4	3	9	5	6

कोरोना वायरसः संकट और समाचार

नवीन भट्ट।

कोरोना वायरस से संबंधित खबरों को नियंत्रित करने को लेकर सरकार का आग्रह चिंताजनक है। लॉकडाउन से प्रभावित मजदूरों-कामगारों के संबंध में केंद्र सरकार ने मंगलवार को सुप्रीम कोर्ट में दो याचिकाएं दायर कीं। अपनी स्टेटस रिपोर्ट में उसने लॉकडाउन की घोषणा के बाद मजदूरों में फैली घबराहट के लिए कई सामाजिक-आर्थिक कारणों को जिम्मेदार ठहराया है। लेकिन उसका मानना है कि पारंपरिक मीडिया, सोशल मीडिया और अन्य सूचना माध्यमों से दी गई गलत सूचनाओं के कारण हालात ज्यादा बिगड़े। इसलिए उसने कोर्ट से यह निर्देश देने की मांग की कि कोरोना वायरस से संबंधित किसी भी खबर को प्रसारित करने से पहले सरकारी तंत्र से उसकी पुष्टि करा ली जाए।

गनीमत है कि कोर्ट ने सरकार की इस बात को नहीं माना और 24 घंटे के भीतर उसे एक ऐसा पोर्टल बनाने को कहा, जिससे लोगों को बीमारी से जुड़ी सारी सूचनाएं और जानकारियां मिल सकें। शहरों से समाज के कमजोर वर्ग के पलायन को लेकर सरकार की चिंता वाजिब है। उसकी यह आशंका भी निराधार नहीं है कि सोशल मीडिया पर आई फर्जी खबरों और अफवाहों ने मजदूरों में घबराहट पैदा की, जिससे वे दिल्ली तथा अन्य शहरों से पैदल ही अपने गांव के लिए निकल पड़े। लेकिन इस गड़बड़झाले को रोकने का यही तरीका अगर सरकार की समझ में आता है कि वह खबरें लेने-देने का काम अपने हाथ में ले ले, तो उसे अपनी इस समझ पर पुनर्विचार करना चाहिए। संकट के दौर में लोग हर तरह की खबरें जानना चाहते हैं, सिर्फ वही नहीं जो सरकारी तंत्र बताना चाहता है। सरकारी अमला अगर इतना भी कर ले जाए कि सरकार के स्तर पर हुए फैसलों की जानकारी लोगों तक पहुंचा दे, तो इसे उसकी सफलता समझा जाना चाहिए। किसी खास मुद्दे को लेकर समाज में कहां क्या घटित हो रहा है, इसके सारे ब्यौरे पता करना और बताना उसके बूते से बाहर है। किसी के आसपास क्या घटनाएं घट रही हैं और उसके रोजमर्रा के जीवन को वे किस तरह प्रभावित करने जा रही हैं, यह पता करना और बताना मीडिया का काम है।

मीडियाकर्मी इसके लिए प्रशिक्षित हैं, उनके पास इसके लिए एक विस्तृत ढांचा है और उनका संस्थान सारी खबरों की पूरी जवाबदेही लेता है। अगर कोई मीडिया संस्थान अपनी खबरों को लेकर अगंभीर है तो उसके खिलाफ कार्रवाई के प्रावधान हैं। इस इतिहास-सिद्ध रास्ते को छोड़कर अगर महामारी से जुड़ी खबरों के लिए सिर्फ सरकारी स्रोतों पर निर्भरता बना दी जाती है तो इसके घातक परिणाम हो सकते हैं। मसलन यह कि अफवाहों और फेक न्यूज की आपूर्ति के साथ-साथ इसकी मांग भी बढ़ सकती है। ऐसा हुआ तो सच और झूठ का फर्क खत्म हो जाएगा और लेने के देने पड़ जाएंगे। मामले का सैद्धांतिक पक्ष यह है कि सरकार द्वारा किसी संकट को सामने रखकर खबरों को अपने हाथ में ले लेना अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का उल्लंघन है। आपात स्थितियों में मीडिया वैसे भी सरकार के साथ समझदारी बनाकर चलता है। इसे जरूरत से ज्यादा खींचना भारत जैसे जनतांत्रिक समाज के लिए अच्छा नहीं है।